अध्याय 9

पवित्रीकरण का पूरा किया जाना

याजक के अभिषेक की कहानी लैव्यव्यवस्था 9 में अपने चरम पर पहुँच जाती है। संस्कार के सात दिनों के बाद, आठवें दिन प्रक्रिया समाप्त होती थी, अभिषेक किए गए याजकों के साथ वही करते थे जिनके लिये उन्हें अलग किया गया था: वे मण्डली की उपस्थिति में बलिदानों की एक श्रृंखला की भेंट चढ़ाई (9:1-21)। तब हारून ने लोगों को आशीर्वाद दिया, और वह और मूसा मिलापवाले तम्बू में गए। जब वे दोनों बाहर आए, तो उन्होंने फिर से मण्डली को आशीर्वाद दिया। इसके बाद, यहोवा का तेज दिखाई दिया, और यहोवा के सामने से आग निकली और बलिदान को वेदी पर भस्म कर दिया (9:22-24)। इस तरह, परमेश्वर ने किए गए सभी कार्यों के लिये अपनी स्वीकृति का संकेत दिया।

अध्याय 9 के समापन पर, व्यवस्था दिया गया, मिलापवाला तम्बू बनाया गया, याजकीय पद और मिलापवाले तम्बू को पवित्र किया गया, और बलिदान की विधि शुरू की गई थी। इस्राएल के आत्मिक और धार्मिक भविष्य के लिये सबकुछ उसके उसी स्थान पर था।

आठवें दिन भेंट चढ़ाने की तैयारी (9:1-7)

अभिषेक प्रक्रिया में अन्तिम चरण के आठवें दिन यहोवा के लिये आवश्यक भेंट चढ़ाने का था। इन भेंटों को चढ़ाने से पहले, याजक को प्रशिक्षित किया जाना था कि क्या करना था और बलि पशुओं को इकट्ठा किया जाना था। उसके बाद, पवित्र मिलापवाले तम्बू में प्रस्तुत किए गए पहले चढ़ाई गई भेंटों के साक्षी होने के लिये मण्डली को एक साथ लाया जाता था।

हारून के लिये निर्देश (9:1-4)

[1]आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को और इस्राएली पुरनियों को बुलवाकर हारून से कहा, [2]"पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा, और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा लेकर यहोवा के सामने भेंट चढ़ा। [3]और इस्राएलियों से यह कह, 'तुम पापबलि के लिये एक बकरा, और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो, जो एक वर्ष के हों और निर्दोष हों, [4]और मेलबलि के लिये यहोवा के सम्मुख चढ़ाने के लिये एक बैल और एक मेढ़ा, और तेल से सने हुए मैदे

का एक अन्नबलि भी ले लो; क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा'।"

बलिदान प्रणाली शुरू करने के लिये, मूसा ने पहले हारून को निर्देश दिए।

आयत 1. सात दिनों तक हारून और उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रहते थे। हर दिन वे लैव्यव्यवस्था 8:14-29[1] में वर्णित बलिदान चढ़ाते थे। उस अवधि के पूरे होने के बाद, याजक अपना काम शुरू करने के लिये तैयार थे। इसकी शुरुवात एक विशेष अवसर का होना होता था,[2] जो संस्कारों द्वारा इंगित और इस्राएल की पूरी सभा द्वारा देखा जाता था। इसलिये **मूसा** ने **हारून और उसके पुत्रों** और **इस्राएल के प्राचीनों** (जनता के अगुवों) से बात की और उन्हें होने वाली घटनाओं में उनकी भूमिका के बारे में निर्देश दिया।

टिप्पणीकारों ने इस प्रक्रिया और सृष्टि की रचना के बीच समानता देखी है। जैसे ही परमेश्वर की सृष्टि सात दिनों में पूरी हुई थी और आठवें दिन सृष्टि ने परमेश्वर के ठहराए नियमों के अनुसार काम करना शुरू कर दिया था, वैसे ही याजकों के अभिषेक ने सात दिन लिए और आठवें दिन उन याजकों ने परमेश्वर के ठहराए नियमों के अनुसार बलिदान प्रणाली को नियन्त्रित करने काम शुरू कर दिया।

आयत 2. मूसा ने **हारून** से **पापबलि के लिये एक बछड़ा** और **एक बैल,** और **होमबलि के लिये एक मेढ़ा** लाने और उसके और उसके पुत्रों की ओर से बलिदान चढ़ाने के लिये कहा। पापबलि की आवश्यकता के विषय में नियम है कि एक बैल को महायाजक के लिये पापबलि के रूप में चढ़ाया जाए।[3]

आयतें 3, 4. तब मूसा ने **इस्राएल के पुत्रों** को जो वे करने की अपेक्षा कर रहे थे उससे सम्बन्धित निर्देश दिया। इसमें कोई संदेह नहीं है, उसने पूरी मण्डली से उनके अगुवों "प्राचीनों" को सम्बोधित करते हुए कहा (9:1)। उसने उन्हें **पापबलि के लिये** एक पशु (**एक बकरा**), **होमबलि के लिये** दो पशु (**एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो, जो एक वर्ष के हों**[4]), और **मेलबलि** के लिये दो पशु (**एक बैल और एक मेढ़ा**) लाने के लिये कहा। इसके अलावा, उन्हें **तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नबलि** भी लाना था। इन बलिदानों के प्रत्युत्तर में, **यहोवा** उन्हें **दर्शन देगा**। उस प्रतिज्ञा ने लोगों को मूसा के द्वारा दिए गए आज्ञाओं का अनुपालन करने के लिये प्रेरित करने में सहायता की।

पूरी मण्डली के सामने निर्देश (9:5-7)

[5]और जिस जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तम्बू के आगे ले आए; और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के सामने खड़ी हुई। [6]तब मूसा ने कहा, "यह वह काम है जिसके करने के लिये यहोवा ने आज्ञा दी है कि तुम उसे करो; और यहोवा की महिमा का तेज तुम को दिखाई पड़ेगा।" [7]तब मूसा ने हारून से कहा, "यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाकर अपने और सब जनता के लिये प्रायश्चित्त कर; और

जनता के चढ़ावे को भी चढ़ाकर उनके लिये प्रायश्चित्त कर।"

जब लोग इकट्ठा हुए, तो मूसा ने उन्हें और हारून को और निर्देश दिया।

आयत 5. दिया गया वर्णन निर्गमन के अन्तिम कुछ अध्यायों और लैव्यव्यवस्था के पहले के कुछ अध्यायों के विषय को दोहराती है: लोगों ने वही किया जो उन्हें करने के लिये कहा गया था। उन्होंने चढ़ावे के लिये **जिस जिस वस्तु की आज्ञा** मूसा ने दी थी और वे उन्हें **मिलापवाले तम्बू के आगे** ले आए। तब **सारी मण्डली यहोवा** जो आगे के लिये कहने वाला था उसे सुनने के लिये और उनके याजकों द्वारा उनके समर्पित पवित्रस्थान में किए गए पहले बलिदान को देखने के लिये इकट्ठा हुई।

आयत 6. मूसा ने लोगों से यह आग्रह किया कि जो **आज्ञा यहोवा ने दी** थी उसे सुने और उसका पालन करें ताकि वह उन्हें **दिखाई दे**। याजक बलिदान चढ़ाते थे, परन्तु जो लोग इसे मनाते थे वे उस दिन के बलिदान में स्वयं को सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में मानते थे।

आयत 7. तब **मूसा** ने भीड़ की उपस्थिति में सीधा **हारून से** कहा, उसे बताया कि उसे दूसरे याजकों की सहायता के लिये क्या करना है। उन्हें पहले स्वयं के लिये और फिर **सब जनता के लिये** बलिदान चढ़ाना था। ये बलिदान उनके **प्रायश्चित्त करने** के लिये थे। याजक को जनता की ओर से ऐसा करने से पहले स्वयं के लिये प्रायश्चित करना पड़ता था। बलिदान प्रणाली उन साधनों को प्रदान करना था जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग अपने पापों का प्रायश्चित्त करते हुए और क्षमा प्राप्त करते हुए, उसके साथ एक सही रिश्ता स्थापित कर सकते थे।

याजक के लिये बलिदान (9:8-14)

उस आठवें दिन दो प्रकार के बलिदान चढ़ाए गए थे। एक समूह उन याजकों के लिये था जो इस कार्य के लिये नियुक्त किए गए थे (9:8-14), और दूसरा सब जनता के लिये था (9:15-21)।

पापबलि (9:8-11)

8इसलिये हारून ने वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि के बछड़े का बलिदान किया। 9और हारून के पुत्र लहू को उसके पास ले गए, तब उसने अपनी उंगली को लहू में डुबाकर वेदी के सींगों पर लहू को लगाया, और शेष लहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया; 10और पापबलि में की चरबी और गुर्दों और कलेजे पर की झिल्ली को उसने वेदी पर जलाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। 11और मांस और खाल को उसने छावनी से बाहर आग में जलाया।

याजकों के लिये जो पहली भेंट चढ़ाई जाती थी वह पापबलि होती थी।

आयत 8. जैसे ही **हारून** ने स्वयं के लिये और अन्य याजकों के लिये **पापबलि**

चढ़ाया, उसने 4:3-12 में "अभिषिक्त याजक" के लिये निर्धारित निर्देशों का पालन किया। उसने **बछड़े** का बलिदान कर चढ़ावे की शुरूवात की। महायाजक (सामान्य रूप से याजकों के साथ) दूसरों के पापों के लिये प्रायश्चित नहीं कर सकता था जब तक कि वह **स्वयं के लिये** पापबलि नहीं चढ़ा लेता था। याजक की शुद्धता दूसरों के लिये उसकी मध्यस्थता की प्रभावकारिता के लिये एक आवश्यक शर्त थी।

आयतें 9, 10. हारून के पुत्र, भी प्रायश्चित्त की आवश्यकता वाले याजकीय पद का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, **लहू** को हारून के पास लाए। तब उसने उसका कुछ हिस्सा **वेदी के सींगों** पर लगाया।[5] उसने उसके शेष बचे भाग को **वेदी के पाए पर उंडेल दिया**। सभी पापबलि के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, उसने जानवर के **चरबी** वाले हिस्से को **वेदी पर** जला दिया। पाठक को आश्वासन दिया जाता है कि, बछड़े के बलिदान में, याजकों ने वैसे ही काम किया **जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी**।

आयत 11. परमेश्वर के आज्ञाओं का पालन करने के साथ याजक को श्रेय देने के बाद, अनुच्छेद बताता है कि पापबलि के कुछ हिस्सों को जो आग में भस्म नहीं हुए थे **छावनी से बाहर आग में जलाया**। याजकों को दूसरे पापबलि के मांस को खाने की अनुमति थी, परन्तु उन्होंने अपनी ओर से पापबलि के **मांस** नहीं खाए। परमेश्वर ने उन्हें अपने पापों से लाभ प्राप्त करने की अनुमति नहीं दी थी।

होमबलि (9:12-14)

[12]तब होमबलिपशु का बलिदान किया; और हारून के पुत्रों ने लहू को उसके हाथ में दिया, और उसने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया। [13]तब उन्होंने होमबलिपशु को टुकड़े टुकड़े करके सिर सहित उसके हाथ में दे दिया और उसने उनको वेदी पर जला दिया। [14]और उसने अंतड़ियों और पाँवों को धोकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया।

याजकों का दूसरा बलिदान स्वयं के लिये होमबलि था।

आयत 12. जैसा कि उसने पहले पापबलि के साथ किया था, हारून ने उस व्यक्ति की भूमिका निभाई जो चढ़ावा लाया जब उसने पशु (एक मेढ़ा) का **बलिदान किया**। अन्य याजक, **हारून के पुत्रों** ने **लहू** इकट्ठा किया और शायद उचित संस्कार के साथ उसे **उसके हाथ में दिया**। अब एक याजक के रूप में कार्य करते हुए, हारून ने **उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया**। मूसा के नियम के अंतर्गत अधिकांश चढ़ावे के साथ, इस मामले में शुद्धि, या प्रायश्चित्त के लिये, लहू बहाए जाने की आवश्यकता थी।

आयतें 13, 14. होमबलि को पूरा करने के लिये, याजकों ने पशु के मांस को **टुकड़े टुकड़े** किया और उन्हें हारून के **हाथ में दे दिया**। उसने उन्हें वहाँ रखा जहाँ उन्हें **वेदी पर जला दिया** जाए। इसी प्रकार, **हारून के अंतड़ियों और पाँवों को धोने** के बाद, उन्हें **वेदी पर** रखकर पूरी तरह से जला दिया जाता था।

जबकि **होमबलि** ने "प्रायश्चित्त" (1:4) पूरा किया, स्पष्ट है कि इसका प्राथमिक महत्व परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाने वाले के प्रतीकात्मक समर्पण को शामिल करता था। जो पशु को बलि करने के लिये लाया था, उस पर अपना हाथ रखा, और फिर पूरा पशु को आग में भस्म किया जाता था। परमेश्वर को यह पूरी तरह से दिया जा रहा है, बलिदान का चढ़ानेवाला स्वयं को परमेश्वर को देने का प्रतीक था। इस अवसर पर, पापबलि के माध्यम से पापों की क्षमा प्राप्त करने के बाद, याजकों ने इस होमबलि के द्वारा स्वयं को प्रतीकात्मक रूप से यहोवा को समर्पित किया।

लोगों के लिये बलिदान (9:15-21)

स्वयं याजक के लिये इन बलिदानों के बाद, याजक ने जनता के लिये बलिदान चढ़ाया। ऐसा करने में, उन्होंने उस कार्य की शुरूवात की जिसके लिये परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था।

पापबलि, होमबलि और अन्नबलि (9:15-17)

15तब उस ने लोगों के चढ़ावे को आगे लेकर और उस पापबलि के बकरे को जो उनके लिये था लेकर उसका बलिदान किया, और पहले के समान उसे भी पापबलि करके चढ़ाया। 16और उसने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया। 17और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उसमें से मुट्ठी भर वेदी पर जलाया, यह भोर के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया।

हारून ने आठवें दिन लोगों के लिये तीन प्रमुख प्रकार का बलिदान चढ़ाए।

आयत 15. लेखक ने पिछले कुछ आयतों के विषय और इस अनुच्छेद के शीर्षक के बीच एक अन्तर जताया है। वह उन बलिदानों का वर्णन कर रहा था जिन्हें हारून ने अपने स्वयं के लिये किए थे (9:7); परन्तु यहाँ उसने **लोगों के लिये** किए गए बलिदानों के बारे में बताना शुरू किया - दूसरे शब्दों में, **लोगों के चढ़ावे** के बारे में। हारून स्वयं ने **पापबलि के बकरे** को लिया और **पाप के लिये** चढ़ाकर उसका **बलिदान किया। पहले के समान** अभिव्यक्ति का अर्थ है कि लोगों के लिये पापबलि उसी समान रीति से किया गया था जिस रीति से याजकों के लिये पापबलि चढ़ाया जाता था। पापबलि का उद्देश्य क्षमा था। इसके चढ़ाए जाने के बाद, लोग अपने पापों से शुद्ध होकर परमेश्वर के सामने खड़े हो पाते थे।

आयत 16. तब लोगों की ओर से **होमबलि** चढ़ाया गया; हारून ने "एक बछड़ा और भेड़ का बच्चा" (9:3) चढ़ाया। यदि याजक के लिये होमबलि ने विशेषता दी कि वे परमेश्वर को दिए गए थे, तो लोगों के लिये होमबलि ने उन्हें स्वयं को उस रीति से देखने के लिये अवसर दिया कि जैसे कि वे भी परमेश्वर को दिए गए थे। उन्हें परमेश्वर के लिये पवित्र बनना था।

आयत 17. हारून ने भी **अन्नबलि** चढ़ाया, जबकि इसमें शामिल किए गए

विवरणों का विस्तृत विवरण नहीं दिया गया है। उसने **उसमें से मुट्ठी भर कुछ हाथों से अपना हाथ भर दिया**, यह संकेत करता है कि, लैव्यव्यवस्था 2 में पाए गए नियमों के अनुसार, उसने वेदी की आग पर बलिदान चढ़ाने के लिये "स्मारक भाग" लिया। अन्नबलि सामान्य रूप से अन्य बलियों के साथ चढ़ाई जाती थी, जो इसे पूरक बलिदान के उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होती थी। इस मामले में, यह पापबलि, होमबलि और मेलबलि जिसके भी साथ होती थी को मज़बूत करने की इच्छा पूर्ति होती थी। यह भोर के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया।

वाक्यांश **भोर के होमबलि के अलावा** कुछ हद तक अस्पष्ट है। यह बताता है कि जिस सुबह और शाम के बलिदानों के बारे में गिनती 28:1-4 में कहा गया है इसकी शुरुवात पहले ही हो चुकी थी, परन्तु ऐसा लगता है कि प्रतिदिन के बलिदान की शुरुवात लैव्यव्यवस्था 9 की घटनाओं के होने से पहले की जा चुकी था। एक स्पष्टीकरण यह है कि "सुबह की होमबलि" (जिसे तामिद के नाम से जाना जाता है) पहले ही शुरू की गई थी। हो सकता है कि यह हारून और उसके बेटों द्वारा किए गए बलिदानों में से एक हो, जो उन्होंने सप्ताह के दौरान मिलापवाले तम्बू के द्वार में बिताए थे।[6] यहूदी विद्वानों ने कहा है कि "सुबह की होमबलि" उस दिन पहले चढ़ाए गए बलिदानों को संदर्भित करती है।[7]

मेलबलि (9:18-21)

18बैल और मेढ़ा, अर्थात् जो मेलबलिपशु जनता के लिये थे वे भी बलि किये गए; और हारून के पुत्रों ने लहू को उसके हाथ में दिया, और उसने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया; 19और उन्होंने बैल की चरबी को, और मेढ़े में से मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं उसको, और गुर्दों सहित कलेजे पर की झिल्ली को भी उसके हाथ में दिया; 20और उन्होंने चरबी को छातियों पर रखा; और उसने वह चरबी वेदी पर जलाई, 21परन्तु छातियों और दाहिनी जाँघ को हारून ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के सामने हिलाया।

हारून ने आगे इस्राएल की मण्डली की ओर से मेलबलि चढ़ाया।

आयत 18. मेलबलि का बलिपशु जो परमेश्वर को आवश्यक था हारून से दो पशुओं (एक **बैल** और एक **मेढ़ा**) की बलि के साथ शुरू हुआ। **हारून के पुत्रों** के साथ पशुओं के **लहू** को उसके हाथ में दिए जाने के साथ विधि जारी रहती थी। तब उसने **उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया**।

आयतें 19-21. जैसा कि होमबलि के बलिदान के साथ, जानवरों के **चरबी** वाले भाग को वेदी की आग पर जला दिया जाता था (9:19, 20)। परन्तु, **छातियों और दाहिनी जाँघ** को **हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के सामने** (9:21) प्रस्तुत किया गया था। ये याजकों का भाग था; वे विधियों में "हिलाए जाते थे" या ऊपर उठाए जाते थे जो संकेत देते थे कि वे परमेश्वर को दिए जा रहे थे। भेंट के बाद, वे

भाग याजकों के होते थे और वे उन्हें खाया करते थे।

क्योंकि मेलबलि मनाया जाता और परमेश्वर के साथ मेल और मनुष्यों के बीच मेल बनाए रखने के लिये आवश्यक होता था, इस बलिदान का उद्देश्य परमेश्वर का इस्राएल के साथ और इस्राएल का एक दूसरे के साथ सहभागिता पर ज़ोर देना था। अर्थात् कह सकते हैं, परमेश्वर वेदी पर जलाए गए मेलबलि के हिस्से को "खाता था।" शेष एक सहभागिता भोजन के रूप में, लोगों द्वारा (इस मामले में, याजकों द्वारा) खाया जाता था, इस्राएल का मानना था कि परमेश्वर इसमें सहभागी होता था।

इस बिंदु पर, याजकों को आधिकारिक तौर पर नियुक्त किया जाता था, जिन्होंने अभी अभी तैयार मिलापवाले तम्बू में बलिदानों की एक श्रृंखला पूरी की थी। उन्होंने निम्नलिखित बातों को किया था: पापबलि, ताकि लोगों को क्षमा किया जा सके; होमबलि, यहोवा को अपने पूरे हृदय से समर्पण व्यक्त करने के लिये; और मेलबलि, ताकि वे मेल के आशीष में आनन्द करें, अर्थात् जन कल्याण और उन्नति में आनन्द मना सकें।

परिणाम: परमेश्वर से आशिषें प्राप्त करना (9:22-24)

22तब हारून ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया; और पापबलि, होमबलि, और मेलबलियों को चढ़ाकर वह नीचे उतर आया। 23तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए, और निकलकर लोगों को आशीर्वाद दिया; तब यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया। 24और यहोवा के सामने से आग निकली और चरबी सहित होमबलि को वेदी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर जनता ने जय जयकार का नारा लगाया और अपने अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

इस अध्याय की 22 से लेकर 24 तक की आयतें अभिषेक की प्रक्रिया के आठवें दिन का जो वर्णन किया गया है उसकी समाप्ति करती हैं। उस दिन चढ़ाई गई बलियाँ उस समय चल रहे धार्मिक समारोह के ऊँचे शिखर की ओर लेकर चली।

आयत 22. अभिषेक किए गए नवनियुक्त महायाजक **हारुन** ने लोगों को आशीर्वाद दिया।

बलिदान चढ़ाने के बाद, परमेश्वर को चढ़ाए गए इन बलिदानों से प्राप्त की गई आशीषों को हारून के द्वारा प्रकट किया गया जब उसने **लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया**। बाइबल में इस प्रकार की आशीषों के पीछे का विचार यह नहीं है कि कोई भी मनुष्य आशीष प्राप्त किए हुए लोगों को आत्मिक अथवा किसी प्रकार के रीति-रिवाज़ सम्बन्धी वरदान प्रदान कर पाया; इसके स्थान पर, यह इस प्रकार समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति परमेश्वर से निवेदन कर रहा था कि वह लोगों को आशीष दे। जेकब मिलग्रोम ने कहा, "हारून के द्वारा लोगों को आशीर्वाद दिया जाना ऐसा बताता है मानो लोगों के बीच में परमेश्वर

की उपस्थिति आ जाए इसके लिए परमेश्वर से निवेदन किया जा रहा हो [देखें निर्गमन 20:24; 1 राजा 8:55-61]।"[8] परमेश्वर के द्वारा अभिषेक किए हुए महायाजक के रुप में हारून की भूमिका के कारण और विशेष रुप से उसकी पवित्र स्थिति के कारण यह निश्चित था कि आशीष के लिए उसके द्वारा की जा रही मध्यस्थता की प्रार्थना सुनी जाएगी।

किसी को भी यह जानकारी नहीं है कि इस अवसर पर हारून ने क्या कहा परन्तु यह सम्भव है कि उसके शब्द उसी समान रहे होंगे जैसे गिनती 6:24-26 में रिकॉर्ड किए गए हैं:

> "यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे; यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे; यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे।"

आयतें 23, 24. लोगों के बीच अपनी महिमा को दिखाने के द्वारा परमेश्वर ने प्रकट किया कि उसने निवासस्थान और याजकीय प्रक्रिया को स्वीकार किया है।

मूसा और हारून ने निवासस्थान में प्रवेश करने के द्वारा परमेश्वर की महिमा को प्रकट करना आरम्भ किया। यहाँ पर यह विवरण देने का कारण यह हो सकता है कि यह बताया जा सके कि हारून को वास्तव में महायाजक के कार्यालय में रखने का कार्य आरम्भ कर दिया गया। निवासस्थान का कार्य पूरा होने के साथ ही मूसा ने इसमें प्रवेश किया; पवित्र किए जाने की प्रक्रियाओं के समय उसने एक याजक के रुप में कार्य किया। अब तक स्वयं हारून ने भी मिलापवाले तम्बू में प्रवेश नहीं किया था। उस तम्बू में वह महायाजक के रुप में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करने जा रहा था (इसी के समान अन्य याजक भी निवासस्थान में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने जा रहे थे)। इस कारण यह आवश्यक था कि इसके आन्तरिक भाग से परिचित हो; और मण्डली के लोगों के लिए यह आवश्यक था कि वे इस सच्चाई के गवाह हों कि उसे (और उसके बेटों को) उस पवित्र ढाँचे में प्रवेश करने का अधिकार है। परिणामस्वरुप, **मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए।**

यह नहीं कहा जा सकता कि मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में कितने समय तक रहे। कुछ लोगों ने यह अनुमान लगाया कि जब तक वे लोग वहाँ पर रहे तब तक मूसा ने (जो कि एक भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था देने वाला और परमेश्वर का प्रतिनिधि था) हारून को आगे ये निर्देश दिए कि निवासस्थान के विषय में परमेश्वर उससे और अन्य याजकों से क्या अपेक्षा रखता है। अन्य सम्भावना यह है कि उन लोगों ने मिलापवाले तम्बू में परमेश्वर के साथ बातचीत करते हुए और उसकी आराधना करते हुए समय बिताया होगा।

जब ये दोनों अगुवे बाहर आए तब इन्होंने **लोगों को आशीर्वाद दिया।** इस प्रकार संयुक्त रुप से आशीर्वाद दिए जाने से इस्राएली लोग इस सच्चाई से प्रभावित हुए होंगे कि याजकीय कार्यों में जिस प्रकार के परिवर्तन के वे लोग गवाह थे उसमें किसी प्रकार का कोई व्यक्तिगत वैरभाव अथवा स्वार्थी अभिलाषा शामिल नहीं थी। हारून ने याजक के रुप में कार्य करने के लिए मूसा से बल के द्वारा अथवा छुप

कर चोरी से यह अधिकार प्राप्त नहीं किया। इसके विपरीत ये दोनों भाई याजकीय कार्य में इस प्रकार के परिवर्तन के लिए एक मन थे; और एक साथ मिलकर मण्डली के लोगों को आशीर्वाद देने के द्वारा उन्होंने अपनी एकता को प्रकट किया।

उस बिन्दू पर अपना वायदा पूरा करते हुए **यहोवा ने अपना तेज सारी जनता को दिखाया**। उसने 9:4, 6 में कहा था कि जिस काम को करने के लिए यहोवा ने आज्ञा दी है उसे अगर लोग करें तो यहोवा का तेज उन्हें "दिखाई" देगा। ऐसा लगता है कि लेखक ने "यहोवा स्वयं दिखाई दिया," कहने के स्थान पर "यहोवा का तेज दिखाई दिया," कहने में पूरा ध्यान रखा। यह विवरण इसलिए इस प्रकार दिया गया है जिससे इस बात का ध्यान रखा जा सके कि पुराना नियम के विचार के अनुसार परमेश्वर को मानवीय आँखों से देखा नहीं जा सकता (और देखा जाना भी नहीं चाहिए) (देखें निर्गमन 33:20)। हो सकता है कि "यहोवा का तेज" बादल और आग के समान दृश्य की ओर संकेत कर रहा हो जिसके द्वारा पूर्व में भी परमेश्वर ने लोगों पर स्वयं को प्रकट किया था (देखें निर्गमन 13:21; 16:10; 40:34)। "यहोवा का तेज" प्रकट होने के साथ ही अथवा इसके तुरन्त बाद ही आकाश से **आग** निकली जिसने **वेदी पर** रखी हुई बलियों को **भस्म कर दिया**।[9]

यह अवसर पाठक को यह स्मरण दिलाता है और जो लोग इसे पढ़ते हैं उन्हें स्मरण दिलाने के लिए रखा गया है जिससे वे इस प्रकार के अन्य अवसरों का भी स्मरण रखें। इस्राएली लोग निश्चित रुप से इस सच्चाई के द्वारा भय से भर गए थे कि परमेश्वर, जिसने सिनै पर्वत पर अपना सामर्थ और बल प्रकट किया था और जिसने पूर्ण कर लिए गए निवासस्थान पर अपनी महिमा का तेज प्रकट किया था (निर्गमन 40:34) वह अब, पवित्र किए गए याजकीय कार्यालय और निवासस्थान को दिव्य स्वीकृति दे रहा था।[10]

इस अवसर पर अपनी महिमा प्रकट करने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य क्या था? आर. के. हैरिसन के अनुसार, परमेश्वर की उपस्थिति ने "पवित्रीकरण के इन समारोहों को स्वीकृति की एक प्रकट मुहर प्रदान की जो कि अभी पूर्ण की गई।"[11] क्लाईड एम. वुड्स ने इसमें परमेश्वर की स्वीकृति को देखा: "अपने सामर्थ के इस प्रकार के प्रकटीकरण के द्वारा परमेश्वर ने बलियों और याजकीय कार्यालय के लिए इस्राएल पर अपनी स्वीकृति स्पष्ट रुप से प्रकट की जिन्होंने बलियाँ चढ़ाने के द्वारा अपनी सेवाएँ आरम्भ की थी।"[12]

परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति की गवाही देते हुए **जनता ने** जय जयकार का नारा लगाते हुए और अपने अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् करते हुए प्रत्युत्तर दिया। उनकी प्रतिक्रिया में आनन्द शामिल था जो इस ज्ञान का परिणाम था कि परमेश्वर उन्हें जानता है और अपना तेज प्रकट करके उसने उन्हें अपना अनुग्रह प्रदान किया है। इसमें डर और भय शामिल थे क्योंकि परमेश्वर उनके बीच में "भस्म करने वाली आग" था (देखें निर्गमन 24:17; व्यव. 4:24; 9:3; इब्रा. 12:29)। स्पष्ट रुप से वह उस व्यक्ति अथवा वस्तु को भस्म कर सकता है जिसका वह चुनाव करता है। इस कारण उन्होंने **जय जयकार का नारा**, सम्भावित रुप से आनन्द के साथ लगाया और डर और भय के साथ **अपने अपने मुँह के बल गिरकर**

दण्डवत् करने लगे क्योंकि वे संसार के परमेश्वर की उपस्थिति में थे।

अनुप्रयोग

अन्य लोगों को आशीर्वाद देना (अध्याय 9)

लैव्यव्यवस्था 9 में पहले हारून ने फिर हारून और मूसा ने मण्डली के लोगों को आशीर्वाद दिया। इन आशीषों में निसन्देह परमेश्वर से यह निवेदन किया गया कि वह अपने अनुग्रह के साथ इस्राएलियों पर दृष्टि करे जिससे वह उन पर अपना अनुग्रह उण्डेल दे। जैसा हारून परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया हुआ और पवित्र किया हुआ महायाजक था इस कारण लोग यह विश्वास कर पाएँ कि उनके लिए उसके द्वारा की गई मध्यस्थता की प्रार्थना प्रभावी है।

व्यवस्था के अन्तर्गत याजकों को विशेष अधिकार और ज़िम्मेदारी दी गई कि वे लोगों को आशीर्वाद दें (गिनती 6:22-27)। इस मसीही युग में, सब मसीही लोग याजक हैं; इस कारण अन्य लोगों को आशीर्वाद देने के लिए सब मसीही लोगों के पास विशेष अधिकार है अर्थात हम सब लोग परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि परमेश्वर उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के द्वारा, सुरक्षित रखने के द्वारा और उन्हें समृद्ध करने के द्वारा आशीर्वाद दे। "परमेश्वर आपको आशीष दे," ये शब्द नया नियम में देखने को नहीं मिलते परन्तु अगर मसीही लोग अन्य लोगों को आशीष देने के लिए परमेश्वर से कहें तो इसमें कुछ गलत नहीं है।

यहाँ तक अन्य लोगों को मात्र यह कहने के स्थान पर कि, "परमेश्वर आपको आशीष दे," अच्छा यह है कि जिस प्रकार का जीवन हम जीते हैं उसके द्वारा उन्हें आशीष प्रदान करें। जब परमेश्वर ने अब्राहम को पहली बार बुलाया तब उसने उससे कहा, "और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा" (उत्पत्ति 12:2)। अब्राहम के लिए यह आवश्यक था कि वह आशीषित हो परन्तु उसके लिए यह भी आवश्यक था कि वह आशीष का मूल हो। वह आशीषित किया गया जिससे वह अन्य लोगों को आशीष दे! फिर भी इस्राएल राष्ट्र ने परमेश्वर से आशीष पायी जिससे वह अन्य सब राष्ट्रों के लिए आशीष का स्त्रोत बने - यह एक ऐसी सच्चाई थी जिसे वे अक्सर भूल जाते थे।

मसीही लोगों के रुप में हम आशीषित किए गए हैं जिससे अन्य लोगों के लिए आशीष का मूल बन सकें। मसीह का अनुयायी एक विश्वासयोग्य मसीही जीवन जीने के द्वारा, एक अच्छा नागरिक बनने के द्वारा, काम के क्षेत्र में एक अच्छा मालिक अथवा कर्मचारी बनने के द्वारा, परिवार का एक अच्छा सदस्य बनने के द्वारा और कलीसिया में एक अच्छा उत्पादक सदस्य बनने के द्वारा उस लक्ष्य को पूरा कर सकता है। हमें चाहिए कि हम उदार, तरस रखने वाले, नम्र, दयालु, प्रसन्नचित रहने वाले, प्रेमी बनने के लिए और धर्मी बनने के लिए प्रयत्न करते रहें। इस प्रकार जीने के द्वारा हम संसार के लिए बड़ी आशीष का कारण बन सकते हैं!

यह कहना आसान है, "परमेश्वर आपको आशीष दे।" इस प्रकार जीना अधिक

कठिन है जिसमें लोग यह जाने जाते हैं कि उन्होंने हमारी उपस्थिति से आशीष पायी है।

समाप्ति नोट्स

[1]निर्गमन 29:35-37 में इससे सम्बन्धित वर्णन को देखें। [2]इस सम्बन्ध में, इसकी तुलना आधुनिक घटनाओं से की जा सकती है जैसे जहाज की शुरुआत, दुकान को खोलना, या कांग्रेस या संसद की पहली बैठक। [3]व्यवस्था में यह नहीं बताया गया कि बलिदान चढ़ाने वाले को होमबलि के लिये क्या लाना था, सिवाय इसके कि, यदि वह "झुण्ड में से" एक जानवर था, तो उसे नर होना (1:10) था। एक मेढ़ा स्पष्ट रूप से इस मानदण्ड पर खरा उतरता है। [4]आर. के. हैरिसन ने इंगित किया कि "आयत 2 और 3 में बलिदान के लिये एकमात्र उदाहरण एक निर्धारित बछड़ा बलिदान में शामिल हैं" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टमेंट कॉमेंट्रीज [डाउनर्स ग्रोव, आइएल.: इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980], 104). [5]इस बिंदु पर, इस अध्याय में लागू की गई विधि महायाजक के लिये पापबलि के बारे में लैव्यव्यवस्था 4 में दिए गए निर्देशों से भिन्न था। वहाँ महायाजक को कुछ लहू को मिलापवाले तम्बू (तम्बू में) में ले जाना था और उसे "पवित्र स्थान के पर्दे के सामने, यहोवा के सामने" छिड़कना था (4:5, 6); इस उदाहरण में, उसने तम्बू में प्रवेश नहीं किया, परन्तु केवल उस वेदी पर लहू को लगाया जो तम्बू के बाहर खड़ा था। इस अवसर पर, महायाजक तम्बू में क्यों नहीं गया? हो सकता है कि जब तक वह उस दिन के बलिदान पूरा नहीं कर लेता तब तक पवित्रस्थान में प्रवेश न कर सकता हो। उस समय, हारून मूसा के साथ तम्बू में चला गया (9:23)। [6]जॉन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था,* वर्ड बिब्लिकल कॉमेंटरी, वॉल्यूम 4 (डालस: वर्ड बुक्स, 1992), 123. [7]इस सम्भावना को समझाने के बाद, बारुच ए. लेविन ने लिखा था कि "*लट हा-बोकेर* [इब्रानी वाक्यांश जिसका अनुवाद 'सुबह की होमबलि' किया गया है] के अर्थ को स्वीकार करना प्रश्न खड़ा कर सकता है इस उदाहरण में जो इसका अर्थ है किसी दूसरे स्थान पर अलग हो जाता है" (बारुच ए. लेविन, *लैव्यव्यवस्था,* द जेपीएस टोराह कॉमेंटरी [फ़िलाडेल्फ़िया: ज्यूईश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1989], 57). एक और विचार यह है कि वाक्यांश बाद में किसी संपादक द्वारा जोड़ा गया हो जिससे "तिथि व समय की अशुद्धता" हो सकती है ताकि यह समझाया जा सके कि इस समय का चढ़ावा सुबह के बलिदान की तरह था जिससे आने वाले पाठक परिचित थे। (रोलैण्ड जे. फेले, "लैव्यव्यवस्था," इन *द जेरोम बिब्लिकल कॉमेंटरी,* वॉल्यूम 1, *दि ओल्ड टेस्टमेंट,* एड. रेमण्ड ई. ब्राउन, जोसेफ ए. फ़िट्ज़मीर, और रोलैण्ड ई. मर्फी [एंगलवुड क्लिफ्स, न्यू जेर्सी: प्रेंटिस-हॉल, 1968], 73.) [8]जेकब मिलग्रोम, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था," इन *द इन्टरप्रिटर्स वन-वोल्यूम कमेन्ट्री ऑन द बाइबल,* एड. चार्ल्स एम. लेमोन (नाशविल्ले: अबिंगडन प्रेस, 1971), 74. [9]ऐसा हो सकता है कि कोई इस प्रकार प्रश्न करे कि जब बलिदान पहले ही चढ़ा दिए गए तो फिर ऐसा क्या बच गया था जो इस चमत्कारी आग के द्वारा भस्म किया गया. सम्भावित रुप से इस प्रश्न का उत्तर यह है कि बलिदान, वेदी पर चढ़ा दिए गए और वे उस पर जल रहे थे अथवा वे सुलग रही आग के साथ जल रहे थे परन्तु परमेश्वर की आग ने दिव्य सामर्थ में एक दृश्य रुप से उन सब भागों को भस्म किया जो उस बलिदान में से शेष रह गए थे. कुछ लम्बे समय के बाद एलिय्याह की प्रार्थना के परिणामस्वरुप स्वर्ग से गिरी आग ने वेदी पर रखे हुए बलिदानों को भस्म कर दिया (1 राजा 18:30-40). [10]आर. लेअर्ड हैरिस एक अलग ही दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, वे ऐसा सुझाते हैं कि निर्गमन 40:34 में जिस परमेश्वर के दिखाई देने के विषय में कहा गया वह वही है जिसका वर्णन लैव्यव्यवस्था 9:23 में किया गया है. उसने यह तर्क दिया कि अगर परमेश्वर ने निर्गमन 40 में पूर्ण कर लिए गए निवासस्थान के लिए स्वीकृति दिखाई होती तो उसे फिर से लैव्यव्यवस्था 9 में ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होती. हैरिस ने यह भी कहा कि यह आवश्यक नहीं है कि पंचग्रन्थ का यह भाग एकदम सही क्रम में हो और यह कि निर्गमन 40:29 में दी गई होमबलि और अन्नबलि निवासस्थान

के पूर्व पवित्रीकरण के लिए तर्क देती हैं. इस दृष्टिकोण के अनुसार लैव्यव्यवस्था 8 और 9 की घटनाएँ निर्गमन 40:34 में परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में आगे बताती हैं और परमेश्वर के मात्र एक बार दिखाई देने को निवासस्थान के पूरे किए जाने और उसके पवित्रीकरण के साथ जोड़ा गया. (आर. लेअर्ड हैरिस, "*लैव्यव्यवस्था,*"इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *उत्पत्ति-गिनती*, एड. फ्रेंक ई. गेबलीन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाऊस, 1990], 564-65.) यह विचार अनुपयुक्त जान पड़ता है। ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर ने अपना तेज प्रकट करने की आवश्यकता तब देखी हो जब निवासस्थान को पूर्ण कर लिया गया और याजकीय कार्यालय का पवित्रीकरण किया गया। ऐसा हो सकता है कि निर्गमन 40:29 के बलिदान निवासस्थान को पूर्ण कर लिए जाने के बाद परन्तु याजकीय कार्यालय के पवित्रीकरण से पहले चढ़ाए गए हों।

[11]हैरिसन, 104. [12]क्लाईड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट, वोल. 2 (श्रीवपोर्ट, ला.: लेम्बर्ट बुक हाऊस, 1974), 23.